रेपका – मील के पत्थर

• जून 1978	भारत सरकार द्वारा परियोजना संस्वीकृत की गई .
• 18 जनवरी 1980	भारत के महामहिम राष्ट्रपति श्री नीलम संजीव रेड्डी द्वारा पहिया व धुरा कारखाना राष्ट्र को समर्पित.
• 30 अक्तूबर 1980	पूर्व माननीय रेल मंत्री श्री कमलापति त्रिपाठी द्वारा शिलान्यास.
• 16 अक्तूबर 1983	पहला ई क्यू एस हीट टैप किया गया.
• 30 दिसंबर 1983	प्रथम परीक्षण पहिया ढ़ाला गया (बॉक्स एन).
• मार्च 1984	प्रथम परीक्षण धुरा फोर्ज किया गया.
• 15 सितंबर 1984	माननीय प्रधान मंत्री स्वर्गीय श्रीमती इंदिरा गांधी द्वारा पहिया व धुरा कारखाना का उद्घाटन.
• अक्तूबर 1984	पहला पहिया सेट एसेम्बल किया गया (बॉक्स एन).
• जनवरी 1990	प्रोत्साहन योजना लागू की गई .
• मई 1993	प्रथम 915 मि.मी.व्यास का कोचिंग पहिया बनाया गया.
• जून 1993	पधुका में लैन सुविधा चालू की गई .
• अगस्त 1993	पहला 315 मि.मी.व्यास का कोचिंग पहिया सेट बनाया गया ।
• नवंबर 1994	मैसर्स बीवी.क्यू.आई. द्वारा आई.एस.ओ.9002 प्रमाणीकरण का प्रत्यायन (आई.एस.ओ.9002 प्राप्त करने वाली पहली रेलवे इकाई)।
• जनवरी 1995	पहला 840 मि.मी.व्यास के फ्लैट कन्टेनर वैगन के पहिया का विनिर्माण किया गया.
• मार्च 1995	पहला 840 मि.मी.व्यास का पहिया सेट बनाया गया.
• अक्तूबर 1995	पहला 915 मि.मी.व्यास का वैगन पहिया बनाया गया.
• सितंबर 1995	मैसर्स किर्लोस्कर के लिए 6 लाख रुपए मूल्य का पहला गैर रेलवे आदेश निपटाया गया.
• नवंबर 1995	यू.एस.रेल रोड्स को आपूर्ति करने के लिए पहिया, धुरा के विनिर्माता के रूप में एएआर प्रमाणीकरण का प्रत्यायन.
• दिसंबर 1995	पहला 915 मि.मी. व्यास का वैगन पहिया सेट बनाया गया.
• दिसंबर 1995	पहियों और धुराओं का पहला परेषण अमेरिका को निर्यात किया गया. (कोचिंग 36 पहिये और प्र-श्रेणी धुराएं).
• नवंबर 1997	बेहतर वैगन उपयोगिता के लिए पहिया सेटों का दो टीयर में प्रेषण.

- दिसंबर 1997 — पहला 1097 मि.मी.व्यास के लोको पहिया का निर्माण किया गया. (आयात के बदले में)
- 1997-98 — किसी भी वर्ष में धुराओं का उच्चतम उत्पादन (52,249 नं.).
- फरवरी 1998 — **स्वर्ण मयूर गुणवत्ता पुरस्कार – 1997.**
- फरवरी 1998 — पहला लोको कास्ट स्टील पहिया को परीक्षण के लिए डब्ल्यू डी एस जी लोको में जोड़ा गया.
- जुलाई 1998 — आवर्धन चरण- I समाप्त.
- अगस्त 1998 — प्रथम एमओवी लोको पहिया बनाया गया.
- दिसंबर 1998 — किसी महीने के दौरान पहियों का उच्चतम उत्पादन (10,031)पहिए.
- दिसंबर 1998 — किसी भी महीने में पहियों का न्यूनतम रिजेक्शन प्रतिशत (4.95%).
- 1998-99 — वर्ष में पहिया सेटों का उच्चतम उत्पादन ।(38,624 नं.)
- जनवरी 1999 — शॉप आर्कनेट को फाइबर आधारित ईथरनेट में परिवर्तन.
- मार्च 1999 — एमओवी कास्ट स्टील पहिया लगे पहला डब्ल्यू डी एम 2 लोको संख्या 16464 का परीक्षण.
- जून 1999 — **मैसर्स बी.वी.क्यू.आई. द्वारा आईएसओ 14001 का प्रत्यायन (आई एसओ 14001 प्राप्त करने वाली पहली रेलवे इकाई).**
- सितंबर 1999 — पहला एमजी कोचिंग पहिया बनाया गया (आयात के एवज में).
- मार्च 2001 — आईएसओ 9001-2000 का प्रत्यायन (आईएसओ 9001-2000 प्राप्त करने वाली पहली रेलवे इकाई).
- नवंबर 2001 — एमओवी सामग्री मिश्रण के साथ पहला एमजी लोको पहिया की ढ़लाई.
- जनवरी 2002 — उ.सी.रेलवे में लोको नंबर 6494 में जोडा गया प्रथम एमजी लोको पहिया का परीक्षण.
- मार्च 2002 — **मैसर्स एचईआईएल/कोलकाता को 5280 कॉनकॉर फ्लैट कन्टेनर वैगन के पहिया सेटों की आपूर्ति जो कि गैर रेलवे ग्राहक से प्राप्त 30 करोड़** रुपए मूल्य के उच्चतम एकल आदेश था.
- अप्रैल 2002 — मैसर्स ट्रान्सपोर्टेशन तकनॉलजी सेंटर, यू.एस.ए.में बीजी लोको पहियों की डिज़ाइन की वैद्यता.
- अप्रैल 2002 — बीजी (1092 मि.मी.व्यास)लोको पहिया को सवारी रेल इंजनों में चलाने के लिए आरडीएसओ से स्वीकृति.
- अप्रैल 2002 — बीजी (1092 मि.मी.व्यास) लोको में एमओवी कॉस्ट पहियों का नियमित प्रयोग के लिए रेलवे बोर्ड द्वारा स्वीकृति.

- 2002-03 साल में पहियों का उच्चतम उत्पादन (101554 पहिए).
- जून 2002 स्वर्ण मयूर पर्यावरण प्रबंधन पुरस्कार.
- जुलाई 2002 किसी भी महीने में उच्चतम हीट की संख्या (429 हीट).
- सितंबर 2002 पधुका परियोजना की रजत जयंती.
- जनवरी 2003 पहला एमजी-डीईएमयू पहिया ढाला गया.
- फरवरी 2003 **नवीनतम उत्पाद के लिए स्वर्ण मयूर पुरस्कार.**
- 15 फरवरी 2003 रेल पहिया कारखाना के रूप में पधुका का पुन: नामकरण.
- 15 मार्च 2003 रेपका कॉलोनी और अस्पताल के लिए आईएसओ 14001:1996 प्रमाणीकरण .
- मई 2003 एनकॉन सिस्टम व इरकॉन के माध्यम से मलेशिया को क्रमश:1128176 रुपए और 2983200 रुपए मूल्य के निर्यात का आदेश.
- सितंबर 2003 **ट्राक्शन मोटर आर्मेचर शाफ्ट का पहला बैच रेलवे कर्मशालाओं को प्रेषित.**
- दिसंबर 2003 ग्रीनटेक पर्यावरण उत्कृष्टता पुरस्कार.
- 6 फरवरी 2004 भारतीय फाउन्ड्रीमैन संस्थान द्वारा 2003 के दौरान उत्कृष्टता के लिए विशेष सम्मान .
- 5 जून 2004 कर्नाटक राज्य सरकार से पर्यावरण के लिए राजीव गांधी परिसर प्रशस्ती परस्कार 2003.
- 21 जून 2004 इंजीनियरी क्षेत्र में 2003-04 के लिए ग्रीनटेक संरक्षा स्वर्ण पुरस्कार.
- 9 नवंबर 2004 वर्ष 2004 के लिए कॉर्पोरेट सामाजिक जिम्मेदारियों के लिए स्वर्ण मयूर पुरस्कार.
- 15 जनवरी 2005 **वर्ष 2004 के लिए संरक्षा के लिए स्वर्ण मयूर पुरस्कार.**
- 25 फरवरी 2005 रेपका का ओशास-18001 के लिए 'प्रमाण पत्र' प्राप्त.